उर्गम घाटी के ग्रामीणों ने तैयार किया मिश्रित वन

भुवन शाह

शासन प्रशासन ने भले ही उर्गम घाटी की सुध नहीं ली हो पर घाटी के ग्रामीणों पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभा रहे हैं। ग्रामीणों ने बिना किसी सरकारी मदद के मिश्रित वन तैयार कर मिसाल कायम की है। आज इस वन में संरक्षित प्रजाति के 763 पौधे घाटी की शोभा बढ़ा रहे हैं।

ग्रामीणों ने वर्ष 2008 में मिश्रित वन में पौधे रोपना शुरू किया था। महिला मंगल दल उर्गम और क्षेत्र की स्वयंसेवी संस्था जनदेश के संयुक्त प्रयासों से घाटी के कोलू और पिलखी तोक में मिश्रित वन तैयार किया गया हैं। पिछले सात वर्षों में यहां रोपे पौधों ने आज जंगल का रूप ले लिया हैं। स्थानीय महिलाओं का कहना हैं कि पहले उन्हें अपने मवेशियों के चारे के लिए सुदूर जंगलों में भटकना पड़ता था, लेकिन अब ऐसा नहीं हैं। मिश्रित वन में पेड़ों के नीचे हरी घास भी पर्याप्त मात्रा में मिल जाती हैं। चूल्हा जलाने के लिए सूखी लकड़ी भी इस मिश्रित वन से मिल रही हैं। इस जंगल के संरक्षण में महिला मंगल दल की पूर्व अध्यक्ष माहेश्वरी देवी और वर्तमान अध्यक्ष भागीरथी देवी का अहम योगदान रहा है। भेंटा की पूर्व प्रधान राजेश्वरी देवी का कहना है कि महिला मंगल दल की महिलाओं ने यहां संरक्षित प्रजाति का बांज, खर्सू, देवदार, चमखड़ी, सुराई, किरमोड़, पांगर, जंगली नाशपाती, बेडू, खड़ीक, तुन आदि पौधों का रोपण किया था, जो आज पूरी तरह से जंगल का रूप धारण कर चुके हैं। स्वयंसेवी संस्था जनादेश के सचिव लक्ष्मण सिंह नेगी का कहना है कि मिश्रित वन में आज भी पौधारोपण जारी हैं।

अमर उजाला (देहरादून), *13 June 2016*